स्कूल में बनी सरकार

लोकतंत्र का पहला पाठ

अनिल सिंह

उस समय शहर में नगर निगम के चुनावों का माहौल था। पोडियम में एक बच्चे ने बताया कि उसकी बस्ती में कल बैंड-बाजे के साथ कुछ लोग आए थे। वे पर्चे बाँट रहे थे और चुनाव में वोट देने की बात कर रहे थे। फिर बरगद के पेड़ के नीचे बने चबूतरे पर भाषण भी हुआ था। भाषण देने वाले कह रहे थे कि स्कूल के पास पीने के पानी की एक बड़ी टंकी बनवाई जाएगी।

कक्षा में भी किसी-न-किसी बहाने सरकार की चर्चा हो रही थी। एक कक्षा में बात यहाँ तक पहुँची कि जैसे पूरे देश की एक सरकार होती है, प्रदेश की अपनी एक सरकार होती है, वैसे ही शहर की व्यवस्था सँभालने के लिए भी एक सरकार होती है। इसे नगर निगम कहा जाता है। गाँवों में इसी तरह की व्यवस्था को ग्राम पंचायत कहते हैं।

बच्चों द्वारा बच्चों की सरकार

बच्चों की ओर से सवाल आया कि क्या हमारे स्कूल की व्यवस्था के लिए भी कोई सरकार बनाई जा सकती है? हमने कहा, "बिलकुल बनाई जा सकती है।"

वैसे भी स्कूल में एक व्यवस्था पहले से मौजूद है। यहाँ अलग-अलग विषयों के शिक्षक हैं, रसोई की व्यवस्था है, खेलकूद की व्यवस्था है, पैसे का हिसाब-किताब रखने की ज़िम्मेदारी है, साफ-सफाई के सहायक हैं, बगीचे की देखभाल करने वाले सहायक हैं और एक प्रिंसिपल हैं। समय-समय पर बैठकें होती हैं, योजनाएँ बनाई जाती हैं और हर दिन का टाइम-टेबल तय किया जाता है। यह सब भी एक तरह से सरकार जैसी ही व्यवस्था है। सभी शिक्षक और बच्चों की एक मासिक बैठक भी होती है, जिसमें स्कूल से जुड़े हर तरह के मुद्दों और मामलों पर चर्चा की जाती है।

लेकिन बच्चे तो चुनाव की बात कर रहे थे। उनका कहना था कि इसके लिए न तो चुनाव हुआ और न ही वोट डाले गए फिर सरकार कैसे बन गई। असल में, वोट डालने को लेकर उनकी खासी उत्सुकता थी। और यह बात उनके अनुभव में शामिल थी कि घर के बड़े चुनाव में शामिल होते हैं, चुनाव की खूब बातें

आनंद निकेतन डेमोक्रेटिक स्कूल

समिति प्रमुख चुनाव - 2014

विभिन्न समितियों के प्रमुख के चुनाव के लिए प्राप्त नामांकन

आयोजन समिति - कोई नामांकन नहीं हुआ
व्यवस्था समिति - पार्थ, नन्दन, भूमिका - तीन उम्मीदवार
खेलकूद समिति - भूमिका, पार्थ - दो उम्मीदवार
मेडिकल समिति - अंबर, बीहु, अनीसा - तीन उम्मीदवार
लड़ाई-झगड़ा निपटान समिति - अंबर, बीहु, परी, अनीसा - चार उम्मीदवार
छपाई समिति - बीहू, अनीसा - दो उम्मीदवार
पढ़ाई-लिखाई समिति - प्रकृति, पूनम - दो उम्मीदवार

नाम वापसी

मेडिकल समिति - भूमिका ने मेडिकल समिति से अपना नाम वापस लिया

होती हैं, वे वोट डालने भी जाते हैं पर उन्हें ये मौका नहीं मिलता।

कार्यक्षेत्र व ज़िम्मेदारियों की पहचान

इस तरह स्कूल में बच्चों की भागीदारी वाली एक सरकार बनाने पर सहमति बनी। इसके लिए चुनाव कराने का निर्णय लिया गया। धीरे-धीरे यह विचार स्पष्ट होता गया। व्यवस्था को समझने के लिए अलग-अलग कार्यक्षेत्रों और ज़िम्मेदारियों की पहचान की गई। सुबह की बैठकों और कक्षा में हुई चर्चाओं के दौरान स्कूल के भीतर होने वाले अनेक कामों पर विस्तार से बात हुई। इनमें साफ-सफाई, चाय और भोजन बनाना, पढ़ना-पढ़ाना, बगीचे की देखभाल, खेलकूद, मीटिंग, बाहर घूमने जाना, फिल्म देखना, गीत-संगीत और नाटक, समर कैंप आयोजित करना, स्कूल के लिए स्टेशनरी लाना, खिलौने और प्रयोग सम्बन्धी सामान लाना, तथा बिजली, कंप्यूटर, नल, गैस सिलेंडर और पंखों की मरम्मत जैसे काम शामिल थे। इस तरह कार्यों की एक लम्बी सूची तैयार हुई। बच्चों के साथ गहन चर्चा के बाद इन सभी कामों को जोड़-घटाकर मोटे तौर पर छह प्रमुख श्रेणियों में बाँटा गया। तय हुआ कि इन्हीं कार्यक्षेत्रों की समितियों के लिए चुनाव होंगे और उनके समिति प्रमुख मिलकर स्कूल सरकार का गठन करेंगे।

लड़ाई-झगड़ा निपटान समिति का नाम बड़ी उम्र के समूह की एक बच्ची, अंबर ने सुझाया। उसका कहना था कि यह बहुत ज़रूरी समिति है और इसके बिना काम नहीं चल

सकता। दरअसल, उसकी खुद की रुचि भी ऐसे कामों में थी। वह अक्सर लोगों के बीच समझौता कराती, साथी बच्चों को समझाती और छोटे बच्चों के आपसी झगड़ों में बीच-बचाव करती थी। उसे मीटिंग बुलाकर ऐसे मसलों पर चर्चा करना, समाधान निकालना और माहौल को फिर से सामान्य बनाना एक महत्वपूर्ण काम लगता था।

जिन समितियों के समिति प्रमुखों के लिए चुनाव होना था, वे इस प्रकार थीं – पढ़ाई-लिखाई समिति, रसोई समिति, खेलकूद समिति, मेडिकल समिति, लड़ाई-झगड़ा निपटान समिति और साफ-सफाई व्यवस्था समिति। इन सभी समितियों के नाम सामूहिक चर्चा के बाद बच्चों ने ही तय किए थे।

चुनाव प्रक्रिया

एक शिक्षक को विधिवत चुनाव प्रभारी बनाया गया। बच्चों ने समितियों की ज़िम्मेदारियों और अपने रुझान

पुनःचित्रांकनः अदिति पुतिंग

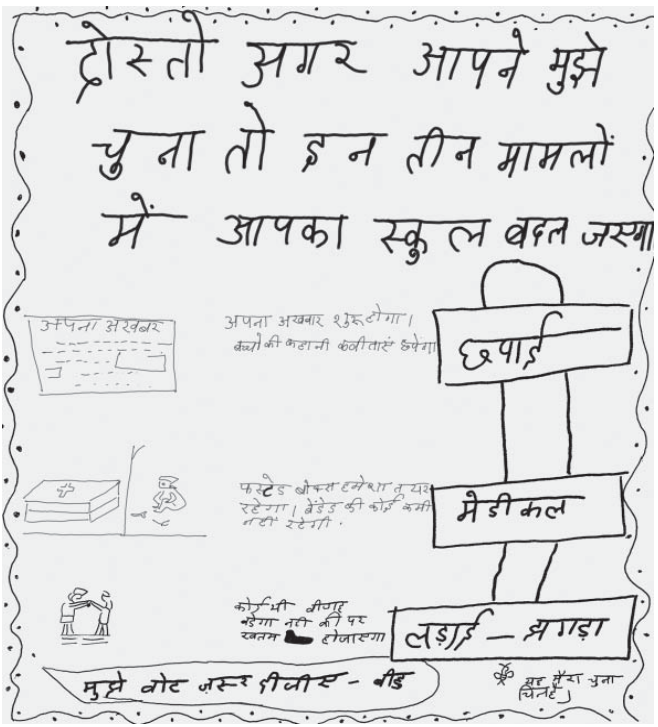

चित्र-1: एक बच्चे द्वारा चुनाव प्रचार के लिए बनाया गया पोस्टर

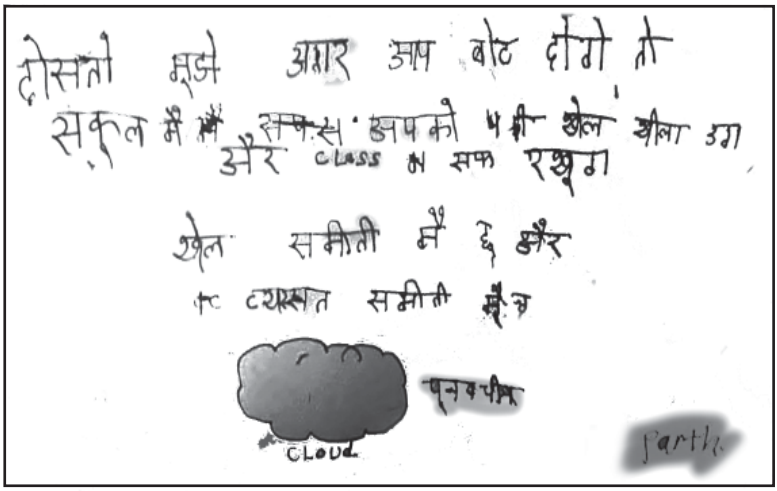

फोटो: अनिल सिंह

चित्र-2: *एक बच्चे द्वारा चुनाव प्रचार के लिए बनाया गया पोस्टर*

के अनुसार विभिन्न पदों के लिए अपने नाम प्रस्तावित किए। इसके लिए बाकायदा नामांकन फॉर्म भरे गए।

चार समितियों के लिए पाँच या उससे अधिक नामांकन प्राप्त हुए, जबकि बाकी दो समितियों के लिए दो-दो नामांकन आए। इसके साथ ही यह भी तय किया गया कि प्रत्येक समिति में प्रमुख के अलावा काम में सहयोग के लिए कम-से-कम तीन और अधिकतम पाँच सदस्य होने चाहिए। इसके लिए बच्चे स्वेच्छा से अपने नाम दे सकते थे।

बाकायदा मतदान की तारीख तय की गई। उम्मीदवार बच्चों ने अपने प्रचार के लिए स्कूल में रंग-बिरंगे पोस्टर बनाए। समिति का प्रमुख चुने जाने पर वे कौन-कौन से नए काम करेंगे, उनकी क्या योजनाएँ हैं और वे स्कूल को किस तरह बेहतर बनाना चाहते हैं – इस बारे में उन्होंने सुबह की संगीत सभा में सबके सामने भाषण दिए। उन्होंने अपने विचारों और वादों को लिखकर एक घोषणापत्र भी तैयार किया।

पढ़ाई-लिखाई समिति के प्रमुख पद की उम्मीदवार बच्ची प्रकृति ने कहा कि वह स्कूल में कहानियों की और अधिक किताबें मँगवाएगी। खेलकूद समिति के प्रमुख पद के उम्मीदवार पार्थ ने कहा कि फुटबॉल फट गई है, इसलिए नई फुटबॉल मँगवाई जाएगी। उसने बास्केटबॉल के लिए नई गेंद लाने और कबड्डी के मैदान में और रेत डलवाने की बात भी कही।

यह पूरा माहौल लगभग एक सप्ताह तक बना रहा। इस दौरान सभी उम्मीदवार बच्चों ने अपने चुने जाने के लिए पूरी तरह दुनियावी अन्दाज़ में प्रचार-प्रसार किया। एक बच्ची ने तो छोटे बच्चों को चॉकलेट बाँटी और उन्हें अपना चुनाव चिन्ह 'क्राउन' दिखाकर कहा कि वोट देते समय 'क्राउन' पर ही स्टैम्प लगाना है।

खेलकूद समिति के पद के उम्मीदवार पार्थ ने एक दिन बच्चों के साथ मिलकर खेलकूद के सभी सामान और उन्हें रखने की जगह को व्यवस्थित किया। वह रोज़ खेल के समय पहल करके पूरे सत्र का नियोजन करता, नए-नए खेल सुझाता और बच्चों को खिलाता था। एक तरह से वह अपनी रुचि, क्षमता और सम्भावनाओं का परिचय दे रहा था, ताकि लोग उसे ही चुनें।

हमने कंप्यूटर से प्रिण्ट निकालकर मतपत्र तैयार किए। घर, तितली, मिक्की, क्राउन, दिल और क्लाउड जैसे चुनाव चिन्ह उम्मीदवारों को दिए गए। मतपत्र में समिति का नाम, समिति प्रमुख पद के उम्मीदवार बच्चे का नाम, उसका चुनाव चिन्ह और उसके आगे एक खाली जगह छोड़ी गई, जहाँ मुहर लगानी थी।

आर्ट एंड एस्थेटिक रूम की चित्रकारी किट में एक छोटा रबर स्टैम्प था, जिस पर हार्ट बना हुआ था। चुनाव के दौरान इसी स्टैम्प और

आनंद निकेतन डेमोक्रेटिक स्कूल

समिति प्रमुख चुनाव चिन्ह - 2014

अंवर		
अनीसा		
वीडू		
पूनम		
प्रकृति		

चित्र-3

इंक पैड का इस्तेमाल चुनाव चिन्हों पर मुहर लगाने के लिए किया गया।

मतदान का अधिकार

मतदान वाले दिन बाकायदा एक टेबल पर बाँस की सहायता से चादर का पर्दा लगाया गया। उसके पीछे एक कार्टन बॉक्स को मतपेटी बनाकर रखा गया। वहीं पास में चुनाव प्रभारी शिक्षक बच्चों की मदद और पूरी प्रक्रिया की निगरानी के लिए बैठे थे। उस दिन स्कूल का माहौल बिलकुल अलग और उत्साह से भरा हुआ था।

शुरुआत में बच्चों को लगा था कि कक्षा 1 से 5 तक के छोटे बच्चों को इस प्रक्रिया में शामिल नहीं किया जाएगा। लेकिन बाद में यह तय हुआ कि स्कूल से जुड़े हर व्यक्ति को इस

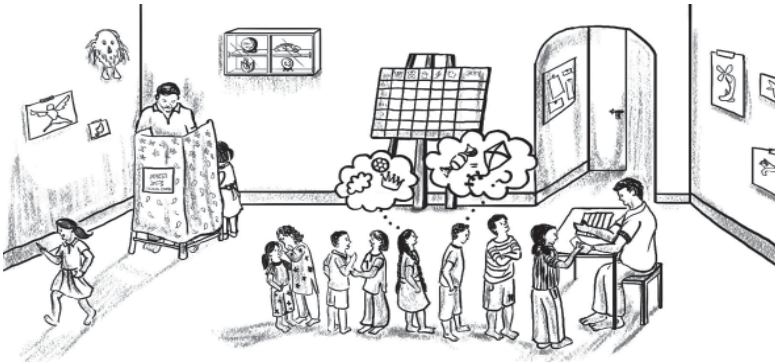

चित्र: अदिति पुरिगे

चुनाव में भाग लेने का अधिकार है। छोटे बच्चों को भी पूरी चुनाव प्रक्रिया के बारे में समझाया गया।

इसी तरह साफ-सफाई सहायक विनोद, छोटे बच्चों की देखरेख करने वाली सहायिका तारा और खाना बनाने वाली देवी दीदी को भी वोट देने के लिए बुलाया गया। शिक्षकों ने भी समान रूप से मतदान किया। सभी के वोटों की गिनती बराबर मानी गई - हर व्यक्ति का एक वोट।

मतदान के बाद मतपत्रों की गिनती की गई और चुनाव परिणाम तैयार किए गए। इसके बाद चुने गए समिति प्रमुखों के नामों की घोषणा की गई। सभी छह समिति प्रमुखों को बुलाकर उन्हें निर्वाचन प्रमाणपत्र भी दिए गए।

इन छह समिति प्रमुखों को मिलाकर स्कूल प्रबंधन समिति बनाई गई, जिसमें मुझे एक अतिरिक्त सदस्य के रूप में नामांकित किया गया। इस तरह सात सदस्यों वाली एक स्कूल सरकार का गठन हुआ।

इन समितियों के लिए अतिरिक्त सहायक सदस्यों के रूप में बच्चों ने अपनी रुचि और समिति के कामकाज को ध्यान में रखते हुए स्वेच्छा से अपने नाम दिए। इस तरह हर समिति में तीन से पाँच सदस्य और जुड़ गए। अब यह कुल 28 लोगों का एक कैबिनेट था। यह तय किया गया कि यह व्यवस्था एक वर्ष तक लागू रहेगी। अगले सत्र की शुरुआत में इसी तरह फिर से चुनाव कराए जाएँगे।

स्कूल सरकार का संचालन

स्कूल सरकार बनने के बाद बैठकों का सिलसिला शुरू हुआ। शुरुआती बैठकों में शिकायतों की भरमार रहती थी, लेकिन धीरे-धीरे बच्चों को काम की गम्भीरता समझ में आने लगी और मुद्दों पर सार्थक

बातचीत शुरू हुई। इस दौरान बच्चों ने कई ज़बरदस्त समाधान भी निकाले।

पढ़ाई-लिखाई समिति की प्रमुख ने सभी बच्चों के साथ मिलकर स्कूल में इधर-उधर बिखरी छोटी-बड़ी पेंसिलें, कटर और रबर इकट्ठे किए। इन चीज़ों के लिए अलग-अलग डिब्बे बनाए गए और उन्हें उसकी निगरानी में रखा गया, ताकि व्यवस्था बनी रहे। यह नियम भी बनाया गया कि काम के बाद पेंसिल, रबर और कटर वापस उन्हीं डिब्बों में रखे जाएँ।

पुरानी कॉपियों में बचे खाली पन्नों को निकलवाकर एक जगह इकट्ठा किया गया और उन्हें सभी कक्षाओं में बराबर बाँटा गया। इसी तरह घरों और स्कूल से वन-साइडेड कागज़ इकट्ठा करके एक बॉक्स में रखवाए गए, ताकि चित्रकारी और अन्य आर्ट-क्राफ्ट के कामों में इन्हीं रद्दी समझे जाने वाले कागज़ों का इस्तेमाल किया जा सके।

एक जगह से पाँच हज़ार रुपए की सहायता राशि मिली थी। स्कूल के लिए खेल सामग्री खरीदने का प्रस्ताव पहले से ही मौजूद था। इस पर निर्णय लेने की ज़िम्मेदारी खेलकूद समिति ने सँभाली। पार्थ ने अपनी समिति और बाकी बच्चों के साथ इस विषय पर चर्चा की। इसके बाद विजय के साथ जाकर बच्चों ने वॉलीबॉल, फुटबॉल, चार रैकेट और शटल, एक नेट, क्रिकेट बैट, रबर की गेंद और लेग गार्ड्स खरीदे।

यह पूरा सामान समिति की निगरानी में रखा गया और उसके उपयोग तथा देखभाल की ज़िम्मेदारी भी समिति ने ही सँभाली।

यह स्कूल सरकार पूरे साल सक्रिय रही। इसके माध्यम से बच्चों ने वोटिंग, चुनाव, बैठकें, योजनाएँ बनाने और प्रस्ताव रखने जैसी लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का गहरा अनुभव हासिल किया।

अनिल सिंह: पिछले 25 वर्षों से सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। विगत डेढ़ दशक से प्राथमिक शिक्षा उनका प्रमुख कार्य रहा है। भोपाल के आनंद निकेतन डेमोक्रैटिक स्कूल की संकल्पना के दिनों से वे जुड़े रहे और उसका संचालन किया। वर्तमान में, टाटा ट्रस्ट के पराग इनिशिएटिव से जुड़कर बाल साहित्य और पुस्तकालय संवर्धन का काम कर रहे हैं।

चित्र: अदिति पुत्तिगे: सृष्टि इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट, डिज़ाइन एंड टेक्नोलॉजी, बैंगलोर से डिज़ाइन की पढ़ाई। वर्तमान में रियाज़ अकादमी फॉर इलस्ट्रेटर्स में अध्ययनरत तथा बाल साहित्य और चित्रांकन के क्षेत्र में सक्रिय रुचि। अपने काम में विशेष रूप से पारिस्थितिकी, जेंडर और भोजन जैसे विषयों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयामों को समझने और अभिव्यक्त करने का प्रयास करती हैं।